International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 22-24

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 22-24
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 06-09-2018
Accepted: 08-10-2018

सोनिया
शोध छात्रा, पी–एच. डी.
संस्कृत–विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

कौशल्या चौहान
शोध–निर्देशक, संस्कृत–विभाग, हि.
प्र.विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला,
हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
सोनिया
शोध छात्रा, पी–एच. डी.
संस्कृत–विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

सद्धर्मपुण्डरीक में वर्णित दानपारमिता

सोनिया, कौशल्या चौहान

प्रस्तावना

बौद्धधर्म में बोधिसत्त्वों को बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए पारमिता नाम वशिष्ट साधना का वर्णन किया गया है। पारमिता ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा बुद्ध की मान्य पदवी बुद्धत्व की प्राप्ति की जा सकती है। बोधिचर्यावतार में आचार्य शान्तिदेव कहते हैं कि जो साधक बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए यत्नवान् है अर्थात् जो बोधिसत्त्व है उसे षट्पारमिताओं (दानपारमिता, शीलपारमिता, क्षान्तिपारमिता, वीर्यपारमिता, ध्यानपारमिता तथा प्रज्ञापारमिता) को ग्रहण करना चाहिए। इन षट्पारमिताओं में प्रज्ञापारमिता का प्रधान्य है। [1] शील सम्पदा की दृष्टि से पारमिताओं का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये पारमितायें पुण्यों तथा पवित्र आदर्शों का पुजा हैं। पारमितायें उदात परम् कल्याणकारी और इनसे सफल एकाग्रता तथा परमोत्तम प्रज्ञा की प्राप्ति होती है। प्रज्ञा से रहित होने पर ये पारमितायें लौकिक कहलाती है तथा बुद्धत्व की प्राप्ति में सहायक नहीं होती। [2] बुद्धविजयकाव्य में बतलाया है कि पारमिताओं को प्राप्त करने वाला साधक जन का हितैषी होता है। वह लोक में सेवक होकर बुद्धता को प्राप्त करता है तथा बुद्धत्व को प्राप्त करके सभी सत्त्वों का उद्धार करने वाले महनीय कार्यों में संलग्न हो जाता है। [3] सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र में बुद्ध कहते हैं जीवन का चरम लक्ष्य निर्वाण नहीं बुद्धत्व की प्राप्ति है। बुद्धत्व की उपलब्धि के लिए पट्पारमिताओं की प्राप्ति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त मैत्री और क्षान्ति का आचरण करते हुये जीवन को संयत एवं सदाचार पूर्ण रखना आवश्यक है। [4] इसी सूत्र में भगवान् महासत्त्व बोधिसत्त्व मैत्रेय से कहते हैं, हे अजित! जो इस धर्मपर्याय को धारण करते हुये इसे दान से, शील से, क्षान्ति से, वीर्य से, ध्यान से या प्रज्ञा से सम्पादित करेगा उसको अप्रमेय अनन्त बुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होगी। [5]

पारमिता का शाब्दिक अर्थ

बौद्ध–धर्म में पारमिता की अवधारणा बड़ी मनोरम कल्पना है। बुद्ध की मान्य पदवी बुद्धत्व को प्राप्त करने के लिए पारमिताओं का सेवन आवश्यक चर्या है। चित्त में बुद्धाकुंर प्रस्फुटित होने के पश्चात् बोधिसत्त्व बुद्धत्व प्राप्ति हेतु जिन विशेष शिक्षाओं की ओर प्रयत्नशील होता है, उन्हें पारमिता कहा जाता है। [6] पारमिता का अर्थ पूर्णत्व या पूर्णता है। [7] स्थविरवाद में पारमिता को पारमी कहा गया है। पारमी अर्थात् पार लगाने वाली गुणों की पराकाष्ठा। [8] दिव्यावदान में पारमिता का पारमी शब्द 'पूर्णता' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। [9] सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र में शारिपुत्र को 'पारमी प्राप्तो' कहा गया है। [10] पारमिता शब्द का सम्बन्ध परम से है जिसका अर्थ उच्चतम् है। [11] ललितविस्तर में कहा है कि बोधिचर्या को पूर्ण करने का उद्योग ही पारमिता है। [12] बोधिसत्त्व बोधिचित्तोत्पाद के अनन्तर शिक्षा ग्रहण करने के लिए विशेष रूप से यत्नशील होता है, जिसके लिए उसे दानादि षट्पारमिताओं का निरन्तर अभ्यास करना पड़ता है। [13] बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए केवल एक जन्म ही प्राप्त नहीं है अपितु अनेक जन्मों और योनियों में निरन्तर पारमिताओं का अभ्यास करके बुद्धत्व की प्राप्ति होती है। इसी उद्देश्य से सिद्धार्थ ने बोधिसत्त्व के रूप में विभिन्न योनियों में जन्म लेकर, पारमिताओं में पूर्णत्व प्राप्त करके शुक्लपक्ष में अन्तिम जन्म लिया और बुद्धत्व प्राप्त करके वे बुद्ध बन गये। [14]

पारमिता के प्रकार

बौद्ध दर्शन में पारमिताओं की संख्या बौद्ध दार्शनिक आचार्यों ने भिन्न–भिन्न बतलायी है। महायानी दार्शनिकों के अनुसार पारमिताओं की संख्या कहीं पर दस बतलायी गयी है, तो कहीं पर छः। जातकादि साहित्य में 1. दानपामिता, 2. सीलपारमिता, 3. नेक्खमपारमिता, 4. प०त्रापारमिता, 5. वीर्यपारमिता, 6. खन्तिपारमित, 7. सच्चपारमिता, 8. अधिष्ठानपारमिता, 9. मेतापारमिता, 10. उपेक्खापारमिता – इन दस पारमिताओं का उल्लेख मिलता है। [15]

स्थविरवादी विद्वान् धर्मरक्षित ने अपने विशुद्धिमग्ग में दश–पारमिताओं का उल्लेख किया है – 1. दान, 2. शील, 3. नेक्खम, 4. प०ञा, 5. विरिय, 6. खन्ती, 7. सच्च, 8. अधिट्ठान, 9. मेता, 10. उपेक्खा। [16] आचार्य शान्तिभिक्षु शास्त्री, आचार्य वसुवन्धु तथा आचार्य शान्ति–देव आदि आचार्यों ने दानपारमिता, शीलपारमिता, क्षान्तिपारमिता, वीर्यपारमिता, ध्यानपारमिता तथा प्रज्ञापारमिता इन छः पारमिताओं का वर्णन अपने ग्रन्थों में किया है। [17] दशभूमिकसूत्र में दस पारमिताओं की संख्या उपलब्ध है – ये दस निम्नलिखित है। 1. दानपारमिता, 2. शीलपारमिता, 3. क्षान्तिपारमिता, 4. वीर्यपारमिता, 5. ध्यानपारमिता, 6. प्रज्ञापारमिता, 7. उपायकौशल्यपारमिता, 8. प्रणिधिपारमिता, 9. बलपारमिता, 10. ज्ञानपारमिता। इस सूत्र में प्रत्येक भूमि के साथ एक पारमिता का सम्बन्ध स्थापित किया गया है। [18] लंकावतारसूत्र में पारमितायें 1. लौकिक, 2. लोकोतर, तथा 3. लोकोत्तम बतायी है। [19] सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र में छह शुभ पारमितायें बतलायी हैं। [20] इसी ग्रन्थ में प्रज्ञा पारमिता के अतिरिक्त अन्य – पांच पारमिताओं दानपारमिता, शीलपारमिता, क्षान्तिपारमिता, वीर्यपारमिता, ध्यानपारमिता का उल्लेख मिलता है। [21] इन पारमिताओं का अनुशीलन बौद्धधर्म का मुख्य अंग है।

दान पारमिता

बोधिसत्त्व का प्रथम चरण दान पारमिता है। जो दिया जाता है वह दान है। [22] सब जीवों के लिए सभी वस्तुओं का दान देना तथा दान के परित्याग करना दान पारमिता है। [23] उत्तम दान करने से लोक में यश तथा परलोक में उत्तम फल मिलता है। ऐसा सोचकर दुःखियों के लिए धन का दान करना चाहिए। [24] दान केवल त्याग ही नहीं अपितु स्वार्थ का परमार्थ में परिवर्तन है, मनुष्य का दान के समान कोई मित्र नहीं है। वह दूसरों के हित को अपना हित समझता है। [25] बोधिचर्यावतार में आचार्य शान्तिदेव ने दान पारमिता के विषय में कहा है कि सदा प्रसन्नता से आसक्ति आदि प्रतिपक्ष से, बुद्ध, बोधिसत्त्व, गुरु, आचार्य आदि गुण क्षेत्र से, माता–पिता आदि उपकार क्षेत्र से तथा दीन–दुःखियों के लिए दिये गये दान आदि कर्मों से महापुण्य प्राप्त होता है। [26] सबको करूणा से युक्त होकर सबकुछ देकर ही दान पारमिता पूरी होती है। दान पारमिता धर्मलोकसुख है। जिसके कारण लक्षणों तथा अनुव्यंजनों से युक्त बुद्धक्षेत्र की परिशुद्धि होती है। [27] सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र में भगवान् सम्पूर्ण बोधिसत्त्वों को सम्बोधित करते हुये इस प्रकार कहते हैं हे भिक्षुओं! मैंने श्रेष्ठ सम्यक् सम्बोधि की प्राप्ति के लिए व्रत लिया था। मेरा चित्त भी चंचल नहीं हुआ, मैंने प्रभूत दान देकर छह पारमिताओं को पूर्ण रूप से प्राप्त करने का उद्योग किया। मैंने अपने शरीर तक का परित्याग किया एवं अपने हाथ–पैर, मस्तक, प्रत्येक अंग एवं प्राणों को भी बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए दान मे दे दिया। [28] स्तूपसंदर्शन परिवर्त में सिन्धुनागराज की आठ वर्ष की पुत्री जो जन्म से ही अत्यन्त बुद्धिमति तीक्ष्ण इन्द्रियों वाली, शरीर, वचन मन के पूर्वकालिक शुभ कर्म से युक्त सभी तथागतों के उपदेश के शब्द एवं अर्थों को धारणी मंत्रों को, प्राप्त करने में तथा एक ही क्षण में सभी धर्मतत्त्वों और सहस्रों समाधान एवं समाधि को प्राप्त करने वाली थी। परन्तु छह पारमिताओं को पूर्ण करते हुये तथा पुण्य कर्म करते हुये भी उसको बुद्धत्व की प्राप्ति नहीं हुयी थी। उस समय नागराज की कन्या के पास एक मणि थी जिसकी कीमत सम्पूर्ण महासाहस्र लोकधातु के मूल्य के बराबर थी। बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए उस कन्या ने उस मणि को भगवान् बुद्ध को दे दिया। नागराज कन्या के द्वारा दान की गयी मणि को भगवान् ने उस पर कृपा करके स्वीकार किया। तभी नागराज कन्या ने महती ऋद्धि से सम्पन्न होकर शीघ्र ही सम्यक् सम्बोधि को प्राप्त कर लिया। उस समय सभी लोगों के सामने उस नागराज कन्या का स्त्रीन्द्रिय लुप्त हो गया एवं पुरुषेन्द्रिय प्रकट हो गया। तथागत की कृपा से उस नागराज की पुत्री ने अपने आपको बोधिसत्त्व के रूप में दिखाया। वह बोधिसत्त्व उसी समय दक्षिण दिशा की ओर चला गया। [29] आचार्य शान्तिदेव ने बोधिचर्यावतार में खान–पान के विषय में कहा है कि प्रेतों, रोगी आदि अनाथों तथा व्रतधारियों के साथ उचित मात्र में बांटकर खाना चाहिए और यदि भिक्षु हो तो त्रिचीवरों से अतिरिक्त दान कर दें। साधक को जब भी ऐसा अवसर प्राप्त हो तो ऐसे आचरण का अभ्यास करना चाहिए। [30] इन्होंने बुद्धविजयकाव्य में बताया है कि दानों में दो ही दान श्रेष्ठ माने हैं, शरीर की स्थिति के लिए दिया जाने वाला अन्नदान तथा बुद्धि की वृद्धि के लिए दिया जाने वाला ज्ञान दान। [31] सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र में कुछ व्यक्ति शिष्यसमूह–समेत जिनों के सामने खाद्य–भोज्य, अन्न, पेय, रोगियों के लिए बहुत सी दवायें पर्याप्त मात्रा में दान के रूप में देते हैं। [32] वे अनेक शय्या एवं आसनों से सुभोभित तथा रत्नों और चन्दन से निर्मित विहार बनाकर सुगतों को दान के रूप में देते हैं। [33] वे बोधिसत्त्वों के लिए करोड़ों की संख्या में बहुमूल्य वस्त्रदान में देते हैं। [34] वह करोड़ों प्रत्येक बुद्धों एवं बोधिसत्त्वों को खाद्य, भोज्य अन्न एवं पान तथा वस्त्र, शय्या एवं आसन आदि दान देकर सन्तुष्ट करते है। [35] दान के उपदेश में बोधिचर्यावतार में कहा गया है कि साधक को अपने शरीर को भी दान देने की भावना रखनी चाहिये, परन्तु शरीर का दान तब तक नहीं करना चाहिये, जब तक वह पूर्ण रूप से करुणा युक्त न हो जाये। जब तक वह पूर्ण रूप से करुणा की चरम सीमा तक पहुंच जाये तब शरीर का दान उचित है। [36] बुद्धविजयकाव्य के सातवें सर्ग में कहा है कि धन ही नहीं, यहां तक की पुत्र, पत्नी, अपने प्राणों (शरीर तक) को किसी की कार्य पूर्ति के लिए अर्पित करना दान पारमिता है। [37] जातकमाला में राजा शिबि कहता है कि जो चीज मांगी जाए वही देनी चाहिए अन्य वस्तु देने में प्रसन्नता नहीं। [38] राजा शिबि ने नेत्र याचना करने वाले ब्राह्मण को नीले कमल की पंखुडी के समान कान्तिमान अपने नेत्रों को दान कर दिया था। [39]

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र में ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्राणियों ने अपने पुत्र और पुत्रियों का दान कर दिया तथा कुछ लोग अपने प्रिय मांस को, कुछ अपने मस्तक, तथा मांगे जाने पर वे अपने हाथ और पैर भी काटकर दान के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं। कुछ लोग अपने मस्तक, अपनी आंखे, अपने श्रेष्ठ शरीर को दान के रूप में दे रहे हैं। उनके हृदय में अग्रबोधि की इच्छा इतनी प्रबल है। वे दान देकर प्रसन्नचित होकर तथागत से ज्ञान की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं। [40] वे प्रसन्नता पूर्वक इस प्रकार की विभिन्न और विचित्र वस्तुओं को दान देते हैं तथा दान देकर वे अपने अन्तःकरण में बोधिप्राप्ति के लिए शक्ति उत्पन्न करते हैं। उन लोगों ने दान के द्वारा ही अग्रबोधि प्राप्त की है। [41]

इसी सूत्र के पुण्यपर्याय परिवर्त में भगवान् महासत्त्व बोधिसत्त्व मैत्रेय से कहते हैं कि हे अजित! जो पाँच पारमिताओं को प्राप्त करके इस संसार में इस बुद्धज्ञान रूपी श्रेष्ठ ज्ञान की खोज में लगा रहता है। [42] वह पूर्ण आठ कोटि सहस्र कल्पों तक बहुश्रावकों को पुनः–पुनः दान को देने में लगा रहता है। [43]

अन्ततः आत्मभाव का त्याग ही निर्वाण है। बोधिसत्त्व बोधिचित्तोत्पाद के अनन्तर शिक्षा ग्रहण के लिए विशेष रूप से यत्नशील होता है। बोधिसत्त्व ज्ञान प्राप्ति के लिए सर्ववस्तुओं का परित्याग करता है तथा अतीत वर्तमान और अनागत काल के कुशल मूल का भी परित्याग करता है, जिससे सब प्राणियों की अर्थ सिद्धि हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बोधिचर्यावतार (पंजिका), भूमिका भाग, पृष्ठ, 26
2. बुद्धविजयकाव्यम् के दार्शनिक सन्दर्भों का समीक्षात्मक अध्ययन, पृष्ठ, 57–58
3. दानशीलक्षमावीर्यध्यानप्रज्ञादि साधनः।
   लब्धास्मि बुद्धतां भूत्वा हितैषी लोकसेवकः।। बुद्धविजयकाव्यम, अध्याय–6, श्लोक सं0–33
4. सद्धर्मपुण्डरीक, भूमिका भाग, पृष्ठ, 20
5. कः पुर्नवादोऽजित य इमं धर्मपर्याय धारयन दानेन वा सम्पादयेच्छीलेन वा क्ष्यान्तया वा वीर्येण वा ध्यानेन वा प्रज्ञा वा

सम्पादयेदृबहुतरपुण्याभिसंस्कारं सं कुलपुत्रो कुलदहिता वा प्रसवेद बुद्धज्ञानसंवर्तनीयमप्रमेयसंख्येमपर्यन्तम। सद्धर्मपुण्डरीक, पुण्यपर्यायपरिवर्त, पृष्ठ, 343
6. पालि जातक एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ, 250
7. बौद्ध–दर्शन–मीमांसा, पृष्ठ, 110
8. दुःख मुक्ति की साधना, पृष्ठ, 34
9. दिव्यावदान, पृष्ठ, 637
10. सद्धर्मपुण्डरीक, ओषधीपरिवर्त, पृष्ठ, 138
11. परम उत्तमः अर्थः परमार्थः। वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमितासूत्र, पृष्ठ, 24
12. ललितविस्तर, चतुर्थ भाग, पृष्ठ, 92
13. बोधिचर्यावतार (पंजिका), पृष्ठ, 26
14. जातक पालि एवं जातक माला तुलनात्मक परिशीलन, भूमिका भाग, पृष्ठ, 15
15. चतुःशतकम्, पृष्ठ, 75
16. दानं सीलं च नेक्खमं, प०ञा विरियेन प०चमं।
खन्ति सच्चमधिट्ठानं, मेतुपक्खो तिमे दस। विशुद्धिमग्ग भाग–1, पृष्ठ, 15
17. दानशीलं क्षमावीर्य ध्यानप्रज्ञादि साधनः। बुद्धविजयकाव्यम्, अध्याय–6, श्लोक संख्या–33; ललितविस्तर, चतुर्थ अध्याय, पृष्ठ, 92; बोधिचर्यावतार (पंजिका), भूमिका भाग, पृष्ठ, 15
18. दशभूमिकसूत्र, भूमिका भाग, पृष्ठ, 16–17
19. लंकावतारसूत्र, षष्ठ अध्याय, पृष्ठ, 6
20. षट् च पारमिता शुभाः। सद्धर्मपुण्डरीक, ओषधीपरिवर्त, श्लो0सं0–76
21. प०चसु पारमिता–तद यथा दानपारमिता, शीलपारमिता, क्षान्तिपारमिता, वीर्यपारमिता, ध्यानपारमिता, प्रज्ञापारमिताया। वही, पुण्यपर्यायपरिवर्त, पृष्ठ, 338
22. दीयते येन तद दानं। अभिधर्मकोश, चतुर्थ कोश, पृष्ठ, 307
23. बौद्ध–दर्शन–मीमांसा, पृष्ठ, 120
24. लोके यशः परत्रापि फलमुत्तदानतः।
भवतीतिः परज्ञाय धनं दीनाय दीयताम।। बुद्धचरित, 18, श्लोक सं0–5, पृष्ठ, 36
25. इह कि०चत्फलं चास्तु परत्र तु महत्फलम्।
नहि दानेन सदृशं मित्रं लोकस्य विद्यते।। बुद्धचरित, 18, श्लोक सं0–65
26. सातत्याभिनिवेशोत्थं प्रतिपक्षोत्थमवे च।
गुणोपकारिक्षेत्रे च दुःखिते च महच्छुभम।। बोधिचर्यावतार, (पंजिका), षष्ठ परिच्छेद, श्लोक सं0 – 81, पृष्ठ, 102
27. ललितविस्तरे, पृष्ठ, 25
28. सद्धर्मपुण्डरीक, स्तूपसंदर्शनपरिवर्त, पृष्ठ, 260
29. सद्धर्मपुण्डरीक, स्तूपसंदर्शनपरिवर्त, पृष्ठ, 266–268
30. बोधिचर्यावतार, षष्टपरिच्छेद, श्लोक सं0 – 85, पृष्ठ, 104
31. दानानामिह सर्वेषां श्रेष्ठमंत्र द्वयं भूवि।
शरीरस्थितयेऽन्नं यज् ज्ञानं यद् वृद्धये।। बुद्धविजयकाव्यम्, अध्याय–77, श्लोक सं0–23
32. ददन्ति दानानि तथैव केचित् सशिष्यसंघेघे जिनेषु संमुखम्।
खाद्यं च भोज्यं च तथान्नपानं गिलानभैषज्य बहू अनल्पकम्।।
सद्धर्मपुण्डरीक निदानपरिवर्त, श्लोक सं0 – 36
33. विहारकोटीशत् कारयित्वा रत्नामयांश्चो तथ चन्दनामयान्।
प्रभूतशय्यासनमण्डितांश्च निर्यातयन्तो सुगतान संमुखम्।। वही, श्लोक सं0 – 38
34. वस्त्राण कोटीशत ते ददन्ति सहस्रकोटीशतमूल्य केचित।
अनर्घमूल्यांश्च ददन्ति वस्त्रांण सशिण्यसंघान जिनान संमुखम्।। वही, श्लोक सं0–37
35. प्रत्येक बुद्धांस्तर्पेन्तो बोधिसत्त्वान् कोटयः।
खाद्यभोज्यान्नपानेहि वस्त्रशय्यासनेहि च।। सद्धर्मपुण्डरीक, पुण्यपर्यायपरिवर्त, श्लोक सं0–19, पृष्ठ, 339
36. त्यजेन्न जीवितं तस्मादशुद्धे करुणाश्ये।
तुलाश्ये तु तत्त्याज्याभित्थं न परिहीयते।। बोधिचर्यावतार, 6, श्लोक0सं0–87
37. बुद्धविजयकाव्यम्, 9, श्लोक सं0 – 72
38. यदेव याच्यते तदेव दद्यान्नानीप्सितं प्रीणयतीह दतम्।।
जातकमाला, शिबिजातक, पृष्ठ, 18
39. अथ स राजा नीलोत्पलदलशकलरुचिकर कान्तिनयनमेकं।
जातकमाला, शिबिजातक, पृष्ठ, 18
40. ददन्ति पुत्रांश्च तथैव पुत्री प्रियाणि मांसानि ददन्ति केचित्।
हस्तांश्च पादांश्च ददन्ति याचिताः पर्येषमाणा इममग्रबोधिम्।।
शिरांशि केचिन्नयनानि केचिद्दन्ति केचित् प्रवरात्मभावान्।
दत्त्वा च दानानि प्रसन्नचिताः प्रार्थेन्ति ज्ञानं हि तथागतानाम्।।
सद्धपुण्डरीक, निदानपरिवर्त, श्लोक सं0 – 18–19
41. ददन्ति दानानिममेवरुपा विविधानि चित्राणि च हर्षजाताः।
दत्त्वा च बोधाय जनेन्ति वीर्यं दानेन ते प्रस्थित अग्रबोधिम।।
सद्धपुण्डरीक, निदानपरिवर्त, श्लोक सं0 – 40
42. अथ खलु भगवान् मैत्रेयं बोधिसत्त्वं महासत्त्वनामा मन्त्रयते स्मः। यैरजिता!
यश्च पारमिता प०च समादयेह वर्तते।
इदं ज्ञानं गवेषन्तो बुद्धज्ञानमनुत्तरम्।। सद्धर्मपुण्डरीक, पुण्यपर्यायपरिवर्त, श्लोक सं0–17
43. कल्पकोटिसहस्राणि अष्टौपूर्णानि युज्यते।
दानं ददन्तो बुद्धेभ्यः श्रावकेश्यः पुनःपुनः।। वही, श्लोक सं0, 18, पृष्ठ, 339